पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोतर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.)

सत्रीय कार्य

2010

जनवरी 2010 और जुलाई 2010 सत्रों के लिए

प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

पाठ्यक्रम 01 से 04 (पी.जी.डी.टी. 01 से 04)

सत्रीय कार्य 2010

(जनवरी 2010 और जुलाई 2010 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोडः पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियों,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है, इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके चार पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम में सत्रीय कार्यों का खंडानुसार विभाजन इस प्रकार है:

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2010 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2010 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
पी.जी.डी.टी. 01 अनुवादः सिद्धान्त और प्रविधि	**30.9.2010**	**31.3.2011**
पी.जी.डी.टी. 02 अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष	**30.9.2010**	**31.3.2011**
पी.जी.डी.टी. 03 व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र	**30.9.2010**	**31.3.2011**
पी.जी.डी.टी. 04 प्रशासनिक अनुवाद	**30.9.2010**	**31.3.2011**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य-सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत् प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

- उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तरपुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।
- अपनी उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपनी नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।
- अपनी उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बायें कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केन्द्र का नाम लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामाकंन संख्या : .....

नाम : .....

पता : .....

.....

.....

पाठ्यक्रम कोड : .....

पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....

सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम : ..... तिथि : .....

- पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
- अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से. मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएंगें।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इन सत्रीय कार्यों में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबें निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200-250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित है उन्हे पढ़ लें। प्रश्न के संबध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हे साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।

- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिन्दी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की-सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन-क्षमता का उपयोग करें।

- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चहिए यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि:

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) वाक्यों और अनुच्छेदों के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,

(ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो,

(घ) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हो, और

(ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें,

(च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

(छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

(ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग-अलग लिखें।

(झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

(ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केन्द्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

(ट) अध्ययन केन्द्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केन्द्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

(ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो भी आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केन्द्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केन्द्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

सत्रीय कार्य
पी.जी.डी.टी.-01
अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि

कार्यक्रम कोड: पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड: पी.जी.डी.टी.-01
सत्रीय कार्य कोड: पी.जी.डी.टी.-01
ए.एस.टी.(टी.एम.ए.)2010
अधिकतम अंक: 100

नोट: सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

भाग-1
(खंड 1, 2 और 3 पर आधारित)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। 5×5=25

   i) अनुवाद के संदर्भ में पाठधर्मी और प्रभावधर्मी आयाम स्पष्ट करते हुए उनकी तुलना कीजिए।

   ii) राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय संदर्भ में अनुवाद का महत्व समझाइए।

   iii) नाइडा द्वारा दिए गए अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपानों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

   iv) अनुवादक के गुण और दायित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

   v) कोशों के विभिन्न प्रकार और उनकी उपयोगिता की चर्चा कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। 4×2=8

   i) आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व और उसकी आवश्यकता बताइए।

   ii) अननुवाद्यता की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित शब्दों को कोश के क्रम में लिखिए। 4

sycophant	**spying**	क्षोभ	कल्प
she	**squalor**	क्रूर	कृपा
sticker	**tsunami**	क्यों	क्लेश
strange	**stout**	क्लांत	क्षीण
psychology	**srinagar**	क्यू	क्रीत
syringe	**stationed**	क्षणिक	क्वार
sudanese	**steady**	किरीट	क्रुद्ध
staunch	**psendonym**	क्वाँरा	क्या
stupor	**stripping**	किरण	क्षुब्ध
spirit	**spitting**	क्षेत्र	क्लिष्ट

4. कालिदास के चार पाश्चात्य अनुवादकों के नाम बताइए। 2

5. हिन्दी के किन्हीं चार कोशों के नाम बताइए। 2

6. निम्नलिखित का पता लगाने के लिए आप किन कोशों का उपयोग करेंगे? 2

i) 'जाना' शब्द का अर्थ

ii) 'भिंडी' शब्द के भारतीय भाषाओं में पर्याय

भाग-2

(खंड 4, 5 और 6 पर आधारित)

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। 4×7=28

i) भाषा और संस्कृति के विकास में अनुवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

ii) विज्ञान, कला और शिल्प के रूप में अनुवाद की व्याख्या कीजिए।

iii) लोकोक्तियों और मुहावरों के अनुवाद की प्रक्रिया समझाइए।

iv) मशीनी अनुवाद क्या है? इसमें मशीन-मानव सहयोग का वर्णन कीजिए।

vi) अनुवाद में लिप्यंतरण की आवश्यकता और महत्व स्पष्ट कीजिए।

vii) अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

viii) अनुवाद समीक्षा के स्वरूप और प्रकृति का परिचय दीजिए।

8. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। 4×2=8

i) व्यतिरेकी विश्लेषण अनुवाद में कितना उपयोगी है?

ii) अनुवाद पुनरीक्षण के उद्देश्य क्या हैं?

9. निम्नलिखित का देवनागरी/रोमन में लिप्यंतरण कीजिए।

Murphy's laws	कुवलयानंद
Elizabeth	हिन्दी संस्थान

10. निम्नलिखित का रोमन में लिप्यंतरण विशेषक चिन्हों (diacritical marks) की सहायता से कीजिए। 2

को जानाति जनो जनार्दन मनोवृत्तिः कदा कीदृशी।

11. निम्नलिखित का अनुवाद उपयुक्त मुहावरों का प्रयोग करते हुए कीजिए। 2

i) वह हर वक्त काम से जी चुराता है।

ii) तुम मेरे साथ चाल चल रहे हो।

iii) उसने बहुत छिपाने की कोशिश की लेकिन उसका भांडा फूट ही गया।

iv) रमेश की तो अक्ल पर पत्थर पड़ गए हैं।

12. निम्नलिखित लोकोक्तियों का हिंदी रूप बताइए। 4

i) The grass is greener on the other side.

ii) Mills of Gods grind slowly.

iii) Beggars cann't be choosers.

iv) All cats are grey in dark.

13. नीचे के अंग्रेजी पाठ और उसके हिन्दी अनुवाद को देखिए और अनुवाद का पुनरीक्षण कीजिए।

Gaps in perception of India, Pakistan on Kashmir

By B. Muralidhar Reddy

ISLAMABAD, DEC. 29. Despite the progress of the dialogue process, gaps remained in the perceptions of India and Pakistan on Jammu and Kashmir and security related confidence-building measure (CBMs) at the end of the second round of the composite dialogue.

Mr. Khokar. the Pakistan Foreign Secretary contested the Indian view that "much more" needed to be done on cross-borderterrorism and asserted, "as far as the Pakistan Government is concerned, nothing is happening on the Line of Control (LoC)."

The Pakistan Foreign Secretary further said that the Indian side had been told that "human rights violations" had gone up in Jammu and Kashmir and India needed to address this issue.

Though Mr. Saran, his Indian counterpart, assured the Pakistani delegation that India was not seeking to sideline Kashmir through the route of CBMs and people-to-people contacts.

भारत और पाकिस्तान को कश्मीर के संबंध में नजरिए में खाई

बी. मुरलीधर रेड्डी से

इस्लामाबाद, 29 दिसम्बर बातचीत की प्रक्रिया में प्रगति के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर के मामले में भारत और पाकिस्तान के नजरिए में अंतर बना हुआ है। और निश्चित बातचीत के दूसरे दौर के अंत में सेक्यूरिटी ने विश्वास पैदा करने वाले कदमों (CBM) को relate किया है।

श्री कक्कड़, पाकिस्तान विदेश सचिव ने भारत की इस दृष्टि को चुनौती दी कि सीमापार आतंकवाद पर अभी "बहुत कुछ" करना बाकि है और बल दिया, "जहाँ तक पाकिस्तान सेना का सवाल है, नियंत्रण रेखा (LOC) पर कुछ भी नहीं हो रहा है।"

फिर पाकिस्तान के विदेश सचिव ने कहा कि भारतीय पक्ष से यह बता दिया गया है कि ज. क. में "मानव अधिकार उल्लंघन" हो रहा है और भारत को इस पर पता लिखना चाहिए।

मि. सरन, उसके भारतीय समकक्ष ने आश्वासन दिया पाकिस्तानी डेलेगेशन को कि भारत CBM तथा जनता को जनता संपर्क के रास्ते से कश्मीर के मुद्दे को किनारे करने की तलाश नहीं कर रहा है।

8 निम्नलिखित अनुवादों का मूल्यांकन कीजिए और अपेक्षित सुधार कीजिए।

i) 1 want to clear my name in this matter.

मैं इस वस्तु में अपने नाम को साफ करना चाहती हूँ।

ii) 1 believe the Minister has arrived.

मुझे भरोसा है कि मंत्री आए हैं।

iii) सोना लुढ़का और चाँदी में नरमी।

Gold rolled down and softness in silver.

iv) चिंता न कीजिए। आपका काम जरूर बन जाएगा।

Don't worry. Your work definitely will become.